आदि शंकराचार्य जी

शंकराचार्य जी का नाम सुनते ही तन, मन, बुद्धि और आत्मा पुलकित हो जाती है। उनके तेजोमय भौतिक शरीर को मनोचक्षु से देखने पर हमारा मन पुलकित हो उठता है, उनके निर्मल मन के बारे में सोचते ही हमारा मन पुलकित हा जाता है। उनकी बुद्धि की तीव्रता को ध्यान में रखने से अपनी बुद्धि भी तीव्र होती है और उनके महान आत्मबोध को जो लोग देख पाते हैं, उनकी आत्मा पुलकित हो जाती है।

श्री शंकराचार्य जी महान ज्ञानी और योगी हैं। उनकी महान उपलब्धियाँ हैं–भौतिक काय होना अर्थात् मांसपिड को मंत्र पिंड बना कर इच्छित स्थान पर पल भर में पहुँच जाना तथा परकाय प्रवेश विद्या का ज्ञान। हर एक पिरामिड ध्यानी को शंकराचार्य जैसा होना चाहिए। वे हमारे लिए ध्रुव तारे के समान हैं। उनकी आध्यात्मिक शिक्षाओं में 'भजगोविन्दम्' नामक भजन गाने के अभाव में सभी शिक्षण कक्षाएँ तथा शिक्षण शिविर सारहीन तथा कलारहित प्रतीत होते हैं।

पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी की फ़िलॉसफ़ी बुद्ध शंकर, जीसस, मुहम्मद, महावीर आदि के अद्‌भुत ध्यान प्रकाश से उत्पन्न हुई। पिरामिड फ़िलॉसफ़ी में उन सबके उपदेश व प्रबोध भरे हुए हैं। श्री शंकराचार्य जी के चरणों में सारे पिरामिड ध्यानियों का विनम्र प्रणाम।

हे महास्वामी! आप हममें हैं, हमारे साथ हैं, हमसे अद्वैत के रूप में मिल कर रह रहे हैं।